पंजाब का लोक संगीत : एक समृद्ध सामाजिक परम्परा

Dr. Narendra Kaur
Associate Professor in Music, RRMK Arya Mahila, Mahavidyalaya, Pathankot, Punjab

लोक संगीत किसी भी सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। यह मानव हृदय में स्थित गहनतम अनुभूतियों की सरलतम और सहज अभिवयक्ति का साधन है। यह शास्त्रीय संगीत की आधार शिला है। भारत के प्रत्येक प्रान्त का अपना एक विशेष लोक संगीत है, जो वहाँ के आंचलिक क्षेत्र से प्रभावित होता है। पंजाब का लोक संगीत समस्त देशों के दिलों पर राज कर रहा है। भाषा की सीमाएँ इस की सार्वभौम लोकप्रियता में बाधा नहीं डाल सकी हैं। पंजाब के लोक गीतों में बहुत से शास्त्रीय रागों का आभास मिलता है। दरअसल शास्त्रीय संगीत के कुछ राग लोकधुनों से ही विकसित हुए हैं। सिदूंरा, मांड, पहाड़ी, मुल्तानी, सिंध भैरवी इत्यादि तत्कालीन लोक धुनों से ही विकसित हुए और आज शास्त्रीय रूप धारण कर चुके हैं। लोकसंगीत वस्तुतः शास्त्रीय संगीत का उद्गम स्रोत है। शास्त्रीय संगीत की टप्पा शैली, जो शोरी मियाँ द्वारा प्रचार में लाई गई, भी पंजाब के ऊंट हांकने वालों द्वारा गाए जाने वाले लोकगीत का ही परिमार्जित रूप है। इसी प्रकार पंजाबी और मुल्तानी काफियाँ जो उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आती हैं भी लोक धुनों से ही विकसित हुई हैं। पंजाब अंग की ठुमरी पर भी यहाँ की लोक धुनों का ही प्रभाव है। पंजाब राज्य भारत का एक ऐसा प्रदेश है जिसका लोक संगीत सर्वाधिक समृद्ध है। पंजाब का लोक संगीत इतना मधुर और सुरीला है कि देश के अन्य राज्यों और विश्व के अन्य देशों में भी इसने अपना स्थान बना लिया है। भंगड़े की धुन केवल पंजाब के नवयुवक को ही आकर्षित नहीं करती वरन् दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और कनाडा रहने वालों को भी नचा देती है। पंजाब का लोक संगीत फिल्मी दुनिया का भी एक अहम् हिस्सा बन चुका है। फिल्मी गीतों में पंजाबी लोक संगीत का प्रयोग प्रचूर मात्रा में होता है।

स्वाभाविक रूप से ही पंजाब के लोगों को बड़ा खुशहाल और मनमौजी समझा जाता है। यहाँ के लोग बहुत ही खुश दिल वाले होते हैं। नाचना गाना तो इनकी फितरत है। इसीलिए निश्चित ही है कि जैसी मानसिक स्थिति वैसा ही संगीत। लोक संगीत तो इनकी मनः स्थिति और सामाजिक वातावरण का आइना है। पंजाब का लोक संगीत पंजाब की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों का द्योतक है। पंजाबी लोक संगीत इतना व्यापक है कि इसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के प्रत्येक अंग से सम्बन्धित लोकगीत और लोक धुनें उपलब्ध हैं।

पंजाब में प्रचलित कुछ प्रमुख लोकगीत और लोक धुनें एवं उनका सामाजिक महत्व

1 **सुहाग** :– यह अत्यन्त भावपूर्ण गायन है। बेटी की शादी पर सुहाग गीत गाये जाते हैं। इनमें माता पिता और पुत्री के विछोह की आकुलता का हृदयस्पर्शी वर्णन रहता है। किसी सुहाग में बेटी अपने पिता (बाबुल) को एक अच्छा और सुन्दर वर ढूँढने की फरियाद करती है तो किसी में वह बाबुल को छोड़कर जाना नहीं चाहती, उदाहरणार्थ

(क) बेटी चनन दे ओहले ओहले क्यों खड़ी
जाइए, चनन दे ओहले ओहले क्यों खड़ी
मैं तां खड़ी सां बाबल जी दे बार
बाबल! वर लोड़िए
बेटी किहो जेहा वर लोड़िए ?
नी जाइए किहो जेहा वर लोड़िए ?
बाबल! जिऊं तारियां विच चन्न
चन्नां विच कान्ह, कन्हैया वर लोड़िए ।

(ख) साडा चिड़ियाँ दा चम्बा वे
बाबल असां उड जाणां

2 घोड़ियाँ : यह लोकगीत लड़के की शादी के अवसर पर जब दूल्हा घोड़ी पर चढ़ता है तब उसकी बहनें तथा अन्य स्त्रियाँ गाती हैं। इन गीतों में वर के निकटवर्ती रिश्तेदारों जैसे माता–पिता, दादा–दादी, बहन, चाचा–चाची, मामा–मामी इत्यादि का सन्दर्भ होता है। उदाहरणार्थ

(क) घोड़ी तेरी वे मल्लाह सोणीं
सोणीं वे
सजदी काठियाँ दे नाल
काठी डेढ़ ते हज़ार
मैं बलिहारी वे माँ देया सुरजना।

(ख) उठ नी खेल घोड़ी, बाबे वेहड़े जा
बाबे दे मन शादियाँ तेरी दादी दे मन चा
घोड़ी चुगदी हरया घाह
घोड़ी पई सवलड़े राह
घोड़ी सांवली सइयो।

3 सिट्ठणियाँ : ये गीत विवाह के मौके पर स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं। इन गीतों से माहौल में रौनक पैदा हो जाती है। इसमें लड़का–लड़की और दाम्पत्य जीवन के बारे में वर्णन होता है जैसे

(क) कुड़ी तां साडी तिल्ले दी तार ए
मुंडा तां दिसदा कोई घुमियार ए
जोड़ी तां फबदी नहीं।

4 छंद : दूल्हा जब बारात लेकर जाता है तो उसकी सालियाँ और वधु की सहेलियाँ उससे छंद सुनती हैं। इन छन्दों से हास परिहास का वातावरण पैदा होता है। उदाहरणार्थ

(क) छन्द परागे आइए जाइए
छन्द परागे वालीयां
सोने दा मैं महल चिणावां
विच बिठावां सालीयां।
छन्द पराग आइए जाइए
छन्द परागे पहीया
दूजा छन्द तां सुणावां
जे सस्स देवे रूपइया।

5 वैण और अलाहुणियाँ :– ये गीत किसी की मृत्यु हो जाने पर गाए जाते हैं। जब यह गीत अकेली स्त्री गाती है तो उसे वैण कहते हैं और जब सामूहिक रूप में विलाप करती हैं तो उसे अलाहुणी कहते हैं। पश्चिमी पाकिस्तान में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती थी तो निकट सम्बन्धी स्त्रियाँ गोल चक्कर में खड़ी हो जाती थीं और बीच में नैण होती थी जो छाती पीट–पीट कर मृतक व्यक्ति के गुणों का बखान करती थी बाकी की स्त्रियाँ भी छाती पीट पीट कर उसके पीछे बोलती थीं।

6 टप्पा :– यह पंजाब में प्रचलित एक लोकप्रिय लोकगीत है। इनमें श्रृंगार रस प्रधान रहता है। इन टप्पों में प्रेम मिलन और वियोग की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। इनकी विशेष धुन होती है। और कहरवा ताल होती है। इनमें लड़का–लड़की अथवा दो समूहों में सवाल जवाब और कटाक्ष भी होता है। जो बहुत रूचिकर लगता है, उदाहरणार्थ

सवाल बाइसाइकिल चलाई जांदे हो
ओ तुहाडी कौन लगदी
जिन्नू पिछे बिठाई जांदे हो

जवाब बाइसाइकल चलाई जांदे हां
ओ साडी वाइफ लगदी
जिन्नू पिछे बिठाई जांदे हां।

7 माहीया :– माहीया बालो नामक एक प्रसिद्ध प्रेम कथा है। इन प्रेमियों ने ही अपने मनोभावों को सवाल–जवाब के रूप में व्यक्त किया और उसी का नाम 'माहीया बालो का टप्पा' पड़ा। बालो अपने प्रेमी को माहीया सम्बोधित करती थी यद्यपि उसका नाम मुहम्मद अली था। कालान्तर में माहीया प्रेमी का पर्यायवाची बन गया। माहीए का उदाहरण इस प्रकार है

सवाल हट्टीयां ते फीता ई
सच दस नी बालो
कदे याद वी कीता ई
जवाब मैं खड़ी होई आं विच बेले
कसमे खुदा नी माहीया
याद करनी आं हर वेले।

8 ढोला :– ढोला शब्द प्रिय अथवा प्रियतम के लिए प्रयोग होता है। विषयवस्तु में यह माहीया के समीप है, अन्तर केवल इतना है कि ढोला गीत में 'ढोला' शब्द जरूर आता है। इसकी धुन सरल और सीधी–सादी होती है। पटियाला घराने के उस्ताद बरकत अली खाँ और आशिक अली खाँ ढोला गायन में बड़ी रूचि रखते थे। ढोला गीत विशेषकर भैरवी और तिलंग राग में गाए जाते हैं। उदाहरणार्थः–

बाजार विकेदीयां छुरीयां
इश्के दीयां चाटां बुरीयां
लगण तां जाणे, जी ढोला।

9 बोलियाँ :– पंजाब के प्रसिद्ध लोक नाच गिद्धा और भंगड़े के साथ बोलियों का प्रयोग होता है। यह संक्षिप्त गीत बहुत ही प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं इनकी विषय वस्तु भी व्यंगयात्मक और हास–परिहास वाली होती है। उदाहरणार्थ

सुण नी मेलणे नचण वालिए
मैं तेरा जस गावां
मंदा बोल न बोलां गिदे विच
वद के बोली पांवा

मैं तां तैनू लैण आ गया
तू लुक बहंदी खूंजे
तेरे बाझ मेरी सुन्नी हवेली
कीहदा चरखा गूंजे ?
लै के जाऊँगा, मोती बाग दीए कूंजे लै के जाऊँगा।

10 वारें :– वार का शाब्दिक अर्थ है हाथ अथवा शस्त्र से आघात पहुँचाना। अतएव इससे अभिप्राय है दुश्मन पर हमला बोलना। युद्धों के समय ढाढी गायक शूरवीरों के उत्साह को बढ़ाने के लिए जो गीत गाते थे उन्हे ही वार कहा जाता था। वार गायन पंजाब में बहुत ही महत्वपूर्ण लोक गायन है। ढाढी इसका गायन धार्मिक मंचों पर करते हैं। वारों में वीर रस की निष्पत्ति होती है। इनमें किसी वीर पुरूष के युद्ध कौशल अथवा बलिदान का वर्णन होता है। गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित वारों की धुनों के नाम इस प्रकार हैं :–

क	मलक मुरीद तथा चन्द्रहड़ा सोहिया की वार
ख	टुंडे असराजे की वार की धुन
ग	सिकन्दर बिराहिम की वार की धुन
घ	लल्लां बहलीमा की वार की धुन
ङ	जोधे वीरे की पूरबाणी की वार की धुन
च	राय महमे हसने की वार की धुन
छ	राणे कैलास तथा मालदे की वार की धुन
ज	मूसे की वार की धुन
झ	राय कमाल दी मौजदी की वार की धुन।

11 हीर :– हीर रांझा की प्रेम कथा सदियों पुरानी है। कवि वारिस शाह की लिखी हुई 'हीर' सबसे अधिक प्रचलित है। इसका गायन भैरवी के सुरों में होता है। वारिस की हीर का उदाहरण इस प्रकार है

हीर आखदी जोगिया झूठ बोलें
कौण रूठड़े यार मनांवदा ई
वे ऐसा कोई न डिठा
मैं ढूँड थकी
जेड़ा गयां नू मोड़ लिआंवदा ई।

12 मिर्ज़ा :– मिर्ज़ा साहिबा की प्रेम कथा भी पंजाब में बहुत मशहूर है। इसे भी काव्य और संगीतात्मक रूप दिया गया है। मिर्ज़ा का गायन ऊँचे स्वर में ज़ोरदार आवाज़ में होता है। इसे अधिकतर पुरूष ही गाते हैं। इसे 'मिर्जे की धुन' कहा जाता है। इसकी ताल को 'मिर्ज़ा ताल' कहा जाता है जो दस मात्रा की होती है। मिर्ज़ा ताल इस प्रकार है:–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धिं	ऽना	धिं	ऽना	धिं	धिंना	गे	नाधा	तिर	किट
X		2		0			3		

13 सस्सी पुन्नू, सोहनी महीवाल, यूसुफ जुलैखा :– इनकी प्रणय कथा भी लोक काव्य और लोक धुनों के रूप में पंजाब में प्रचलित है। सस्सी पुन्नू की धुन सारंग के स्वरों में गाई जाती है। लोक गायक सौन्दर्य वृद्धि के लिए अन्य स्वर समूहों का भी समावेश कर लेते हैं।

14 पूरन भगत :– इस लोक गीत की धुन आसा और मांड रागों की स्वर संगतियों में निबद्ध होती है। इसे लय विहीन मुक्त रूप से गाया जाता है।

उपरोक्त लोकधुनों और लोकगीतों के अतिरिक्त पंजाब में और भी बहुत से लोकगीत प्रचलित हैं जैसे चरखे के गीत, त्रिन्झण के गीत, मिट्टी दा बावा, चीणा, किॅकली, मींह(बारिश) के गीत, त्यौहार और ऋतुओं के गीत, लोहड़ी के गीत, सावन, जुगनी, जिन्दुआ, नूंह–सस्स(साह–बहू) के झगड़े के गीत, झूमर गीत, बाजरे की रखवाली के दौरान का गीत, डाची वाले की धुन, छल्ला, मुंदरी, अंबरसरे दीयां वड़ीया, बुल्ले शाह की काफियाँ इत्यादि।

पंजाब के प्रसिद्ध लोक साज़ :– पंजाब की लोक गायन शैलियों के साथ विभिन्न प्रकार के लोक साज़ों का प्रयोग होता है, जिनके नाम इस प्रकार हैं:– ढोल, ढोलकी, ढड, नगारा, दो तारा, अलगोज़ा, चिमटा, घड़ा, खड़ताल, घुँघरू, सप्प, काटो, बुगचू इत्यादि।

पंजाब के प्रसिद्ध लोक गायक:– पंजाब के लोक गायकों में लाल चन्द, जमला जट्ट का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होने बहुत से शिष्य तैयार किए जो बहुत विख्यात हुए। नरिन्दर बीबा इन्ही की शिष्या हैं। इसके अतिरिक्त आसा सिंह मस्ताना, सुरिन्दर कौर, प्रकाश कौर, महिन्दर कौर, पूरन शाह कोटी, वडाली भाई, गुरदास मान, हंसराज हंस इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। पाकिस्तानी पंजाबी लोक गायकों में नूर जहां, गुलाम अली, हुसैन बख्श, आलम लुहार, ज़ाहिदा अख्तर, फरीदा खानम और बंगलादेश की रूना लैला के नाम भी बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

वास्तव में पंजाब का लोक गायन इतना विशाल है कि इस प्रान्त में लोक गायकों की प्रतिष्ठा शास्त्रीय गायकों से भी अधिक कही जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। पंजाब की लोक संगीत परम्परा

अत्यधिक मधुर, सुरीली और समृद्ध है, जिसका गहन अध्ययन और जानकारी आसान नहीं है। यह अथाह सागर की भाँति है जिसमें जितना अधिक डूबा जाए उतने ही रत्नों की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पंजाब का लोक संगीत इतना समृद्ध है कि प्रत्येक सामाजिक कार्य एवं दिन प्रतिदिन की क्रिया के लिए लोक गीत उपलब्ध है। पंजाब के लोक संगीत के महत्व को देखते हुए आज पंजाब और पंजाब से बाहर के विश्वविद्यालयाके में इस पर खोज अध्ययन हो रहें हैं। आज भी हजारों की गिनती में ऐसे पंजाबी लोग गीत पड़े हैं जिन्हे लिखित रूप में संजोया नहीं गया है। प्रमुख पंजाबी लोक गीत संग्रहों में सर्वप्रथम 1927 में संत राम की पुस्तक *पंजाबी गीत* देवनागरी लिपि में लिखी गई, 1931 में पंडित राम सरन का संग्रह *पंजाब दे गीत* फारसी लिपि में, 1936 में देवेन्द्र सत्यार्थी द्वारा लिखित *गिद्धा* नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिनसे विद्वानों का ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित हुआ। आगे चलकर हरभजन सिंह की *पंजाबण दे गीत*, हरजीत सिंह की *नैं झना*, करतार सिंह शमशेर की *जिउंदी दुनिया* और *नीली ते रावी*, अमृता प्रीतम की *पंजाब की आवाज, मौली ते मेहंदी*, महिंदर सिंह रंधावा की *पंजाब दे लोक गीत* इत्यादि पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हुई। सुखदेव मादपुरी की *गांउदा पंजाब*, डा. नाहर सिंह की *कालियां हरना रोहिए फिरना* और डा. करमजीत की *लोक गीता दी पैड़*। एक ओर जहाँ पंजाब का लोक संगीत दिन प्रतिदिन के जीवन काल में अनेको रंग भरता है वहीं दूसरी ओर अपनी विशालता के कारण विद्वानों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित करता है। अतएव इस विषय पर कई अध्ययन हो चुके हैं, कई हो रहे हैं और कई होते रहेंगे।

सन्दर्भ सूचि

घुम्मन, आसा सिंह, विवाह के लोकगीत, वारिस शाह फाऊंडेशन, अमृतसर, 2005।

घुम्मण, आसा सिंह, राजे महली चम्बा खिड़िया, वारिस शाह फाऊंडेशन, अमृतसर, 2009।

घुम्मण बिक्रम सिंह, पंजाबी लोक गीत, वारिस शाह फाऊंडेशन, अमृतसर, 2006।

थिंद करनैल सिंह, पंजाब दा लोक विरसा (भाग पहला), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला,1996।

पेंटल गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988।

मादपुरी सुखदेव, श्लोक गीतां दी सामाजिक व्याख्या, चेतना प्रकाशन, पंजाबी भवन, लुधियाना, 2003।

सिंह गुरमीत, पंजाबी लोक धारा के कुछ पक्ष, नानक सिंह पुस्तकालय , अमृतसर, 2006।